सर्दी की शोख अदाएं

हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 29 November - 05 December 2026

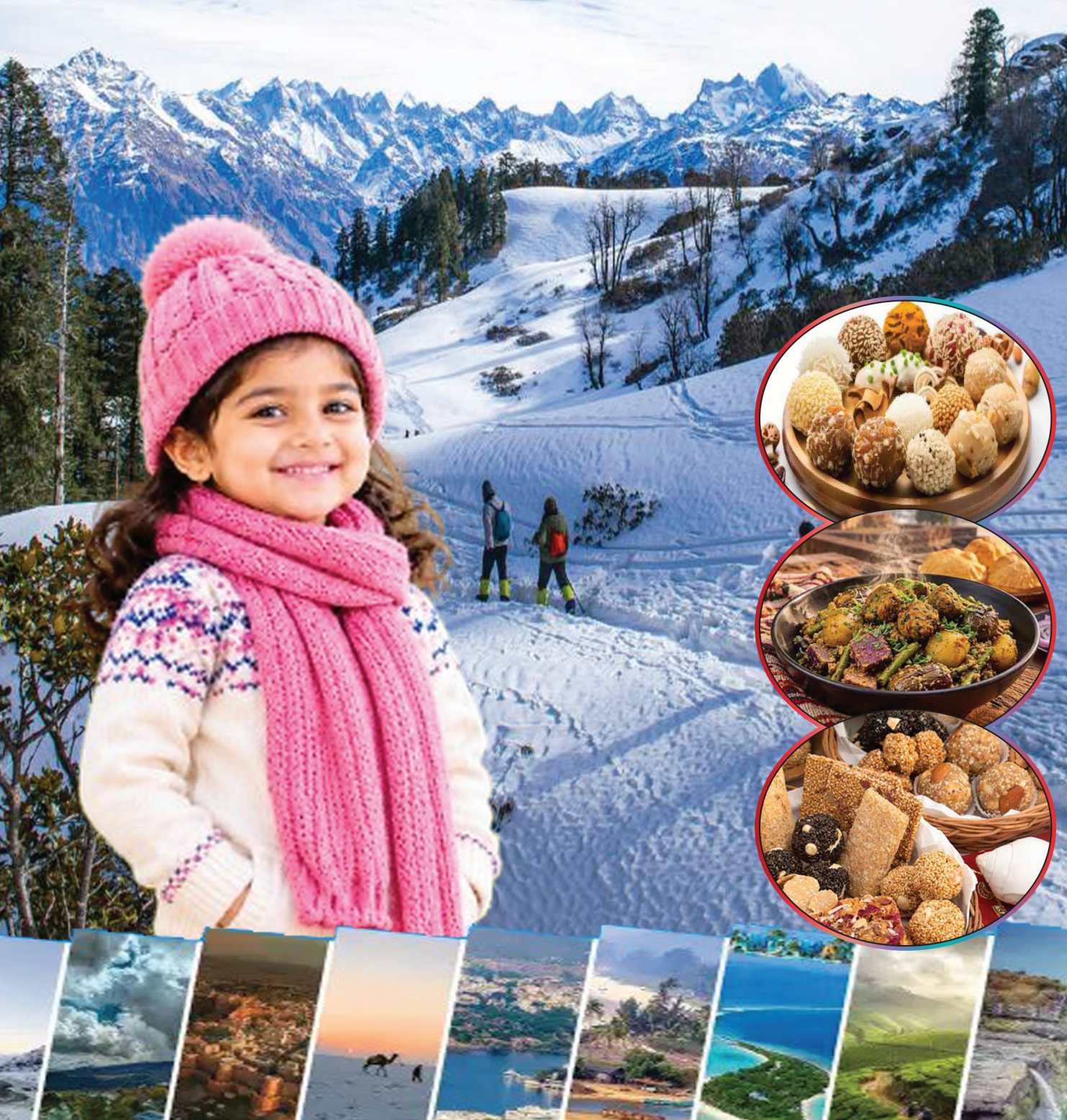

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

TURN YOUR IDLE GOLD INTO INSTANT FUNDS.

THE SMARTER WAY.

- LOAN UP TO ₹25 LAKHS*
- INSTANT ACCESS TO FUNDS
- HASSLE FREE PROCESS
- MINIMAL DOCUMENTATION
- SPEEDY SANCTION & DISBURSAL OF LOANS
- ZERO PRE-PAYMENT CHARGES



INTEREST RATE STARTING AT
8.60%*p.a.

Your Gold Has a Story.
We Guard Every Chapter.

*T & C APPLY

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897204

अनुक्रमणिका

सर्दियों में सौंदर्य बिखेरती प्रकृति	स्निग्धा अवतंस	04
ऐसे करें स्वास्थ्य का कायाकल्प	सोनम लववंशी	06
मौसम में लें खानपान का मजा	ऋचा सिंह	08
मिलावट का घिनौना खेल	महेंद्र तिवारी	11
जिंदगी की नहीं मौत का पर्चा कटता है	सतीश सिंह	13
भारत–नेपाल सम्बंधों में एक नया मोड़	मृत्युंजय दीक्षित	15
दीपाथून पर प्रज्ञवलित होगी 'कार्तिगई दीपम'	वेणुगोपालन	18
टाइम बम बनते बच्चे	दीपक कुमार द्विवेदी	20
महिला हॉकी टीम ने रचा इतिहास	राजीव रोहित	23
कीर्तिमानों की लगाई झड़ी	प्रवीण सिन्हा	24
नव दधीचि नाना भागवत	विजय कुमार	25
ओजपूर्ण व्यक्तित्व के धनी रंगा हरि	संकलन	26
इस ओर भी देखें	संकलन	27
समाचार	संकलन	28

पंजीयन शुल्क

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर–10, सेक्टर–2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई– 400067 फोन नं. : 022–28675299, 022–28678933



सर्दियों में सौंदर्य बिखेरती प्रकृति

पर्यटन



स्निग्धा अवतंस

गुलाबी सर्दियों की शुरुआत हो चुकी है। कोहरे की चादर चहुं ओर दिख रहा है। सर्दियों का अनुभव लोगों को सहज ही रोमांचित कर रहा है। ऐसे में भला पर्यटन की बात कैसे न हो।

ये मौसम बताता है
कि प्रकृति जब अपना रूप बदलती है,
तो इंसान भी निकल पड़ता है
उस सुंदरता को छूने के लिए।

पूरे उत्तर भारत सहित देश के अन्य भागों में भी गुलाबी ठंड की शुरुआत हो चुकी है। इस मौसम में अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग पारम्परिक खानपान भी होते हैं। चाहें वो सरसों का साग हो या मक्का की रोटी, तिल से बने पकवान हो या फिर गुड़ की सोंधी महक सहज ही इसका स्वाद लोगों को आनंदित करते हैं। ये तो खानपान की बात है, लेकिन इस मौसम में पर्यटन का भी अपना अलग आनंद है। देश के कई ऐसे राज्य हैं जहां सर्दियों में प्रकृति अपना सौंदर्य बिखेरती है। जिसे देखने के लिए पर्यटक दूर-दूर से आते है। कहीं घने कोहरे की चादर तो कहीं बर्फबारी तो कहीं सुनहरी धूप तो कहीं ठंड की ठिठुरन में अलाव की आंच में हाथ सेंकना जिसका अनुभव पर्यटकों को लुभाते हैं और उनके आनंद को और भी दुगुना कर देते हैं।

भारत में सर्दियां आमतौर पर नवम्बर से फरवरी तक रहती हैं। इस दौरान देश के अलग-अलग हिस्सों में मौसम बहुत अलग-अलग होता है, जिससे पर्यटन के कई विकल्प खुल जाते हैं। अगर आपको भी सर्दियों में अनेक स्थानों का भ्रमण करना पसंद है तो आप कई जगहों पर जाकर प्रकृति के अनुपम सौंदर्य को देख सकते हैं और इसका आनंद ले सकते हैं।



उत्तर भारत और पहाड़ (कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखंड): ठंड बढ़ जाती है। कई जगहों पर बर्फबारी होती है। तापमान शून्य से नीचे भी चला जाता है। ऐसे में पर्यटक दूर-दूर से आकर बर्फबारी का आनंद लेते हैं जो सहज ही उनके लिए बेहद रोमांचकारी अनुभव देता है।

मैदानी क्षेत्र (दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार): सर्दियों के मौसम में यहां रातें ठंडी होती हैं, सुबह घना कोहरा और दिन में धूप निकलती है। ऐसे में लोगों को बेहद आनंद व सुखद अनुभूति होती है। विदित हो कि इन क्षेत्रों में ठंड की ठिठुरन व कोहरे से लोगों का सामान्य जन-जीवन तक अस्त-व्यस्त तक हो जाता है।

राजस्थान और गुजरात: इन दिनों सुखद धूप, रातें ठंडी होती हैं। यहां का गुलाबी ठंड लोगों को बेहद सुखद अनुभूति देती है।

दक्षिण भारत और द्वीप (गोवा, केरल, अंडमान): हल्का गर्म और आरामदायक मौसम होता है। यूं कह लें कि ठंड में भी गर्म का अनुभव लोगों को होता है।

सर्दियों का मौसम पर्यटकों के लिए बेहद महत्वपूर्ण व आरामदायक माना जाता है। लोगों को प्रकृतिक का असीम सौंदर्य देखने के साथ-साथ पहाड़ों में बर्फ देखने और स्नो राइडिंग का अवसर मिलता है। इसके साथ ही रेगिस्तान में घूमना आसान हो जाता है। समुद्र तटों पर भी भीड़ बढ़ जाती है। कई बड़े त्योहार और उत्सव इसी समय होते हैं (जैसे रण उत्सव, हॉर्नबिल फेस्टिवल)। सरकार और पर्यटन विभाग भी सर्दियों में पर्यटन बढ़ाने पर जोर देते हैं। उत्तराखंड में घाम टपो पर्यटन (धूप सेंकने वाला पर्यटन) लोगों के बीच आकर्षण का केंद्र बना है। सर्दियों का मौसम भारतीय पर्यटन के लिए बहुत लाभदायक माना जाता है। चाहे आप बर्फ देखना चाहें, रेगिस्तान में ऊंट की सवारी करना चाहें, या समुद्र किनारे आराम करना चाहें-सभी विकल्प उपलब्ध हैं। यह मौसम न केवल पर्यटकों को आकर्षित करता है, बल्कि स्थानीय लोगों की आजीविका और संस्कृति को भी बढ़ावा देता है।

कम बजट में भी ऐसे कर सकते हैं यात्रा

ट्रेन को प्राथमिकता दें - सर्दियों में ट्रेन से यात्रा आरामदायक और सस्ती पड़ती है। होमस्टे और हॉस्टल बुक करें। होटल के मुकाबले काफी सस्ता पड़ता है।

वीक डे से बचें - सोमवार से गुरुवार तक बुकिंग सस्ती मिलती है। पैकेज टूर के बजाय खुद प्लान करें। लोकल बस और ऑटो से घूमें।

खाना - होटल के बजाय लोकल ढाबे और होमस्टे का खाना खाएं। सर्दियों में गरम गरम पराठा-सब्जी सस्ता और स्वादिष्ट मिलता है।

सर्दियों में पर्यटन के लिए विशेष टिप्स

गर्म कपड़े अवश्य पैक करें (जैकेट, मफलर, दस्ताने, ऊनी मोजे)। बार-बार खरीदने से बचत होगी।

सुबह जल्दी निकलें - धूप अच्छी रहती है और भीड़ भी कम होती है। कई जगहों पर सर्दियों में कैंपफायर और लोकल फेस्टिवल होते हैं, वो फ्री या सस्ते में एंजॉय कर सकते हैं। पानी की बोतल और थर्मस साथ रखें।

कुछ उपाय व सावधानी अपनाकर आप अपनी यात्रा को और भी सुखद बना सकते हैं और सर्दियों में पर्यटन के अनुभव को और भी आनंदित कर सकते हैं।

•••





सोनम लववंशी

सर्दियों का मौसम स्वयं को बदलने, शरीर को साधने और स्वास्थ्य का कायाकल्प करने का अवसर लेकर आता है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम ठंड को आलस्य का बहाना बनाने की बजाय इसे परिश्रम का अवसर बनाएं।



ऐसे करें स्वास्थ्य का कायाकल्प

सर्दियां आते ही बहुत से लोगों की दिनचर्या बदल जाती है। सुबह बिस्तर छोड़ने का मन नहीं करता, रजाई की गर्माहट बाहर निकलने से रोकती है और शारीरिक गतिविधियां धीरे-धीरे कम होने लगती हैं। दूसरी ओर खानपान में गरिष्ठ भोजन, मिठाइयां और गर्मागर्म पकवान बढ़ जाते हैं। परिणामस्वरूप वजन बढ़ने, सुस्ती और शारीरिक निष्क्रियता की समस्या सामने आने लगती है। जबकि वास्तविकता यह है कि ठंड का मौसम व्यायाम और शारीरिक क्षमता विकसित करने के लिए अनुकूल अवसर प्रदान करता है। गर्मी में जहां तेज तापमान और अत्यधिक पसीना कसरत को कठिन बनाते हैं, वहीं सर्दियों में उचित तैयारी के साथ व्यायाम करना अपेक्षाकृत सहज हो सकता है।

जिम जाना केवल मांसपेशियां बनाने या शरीर को आकर्षक आकार देने का माध्यम नहीं है। यह स्वयं को अनुशासित करने की प्रक्रिया है। जब कोई व्यक्ति प्रतिदिन निश्चित समय पर जिम पहुंचता है, अपनी क्षमता के अनुसार वजन उठाता है और कठिन अभ्यासों को धीरे-धीरे पूरा करता है, तब वह केवल शरीर को मजबूत नहीं कर रहा होता, बल्कि अपनी इच्छाशक्ति को भी धार दे रहा होता है। जिस दिन मन न हो, उस दिन भी अपने संकल्प पर टिके रहना ही आत्मअनुशासन



की असली परीक्षा है। शरीर में परिवर्तन किसी चमत्कार से नहीं आता। इसके लिए नियमितता, धैर्य और निरंतर परिश्रम करना पड़ता है।

योग, व्यायाम और कसरत से संवरेगा तन-मन

भारतीय जीवन परम्परा में शरीर को साधना का माध्यम माना गया है। योग, व्यायाम और शारीरिक श्रम हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। आज जब जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, तब शारीरिक सक्रियता का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। नियमित व्यायाम से मांसपेशियां मजबूत होती हैं, हड्डियों का स्वास्थ्य बेहतर रहता है, हृदय की कार्यक्षमता बढ़ती है और शरीर की सहनशक्ति विकसित होती है। यह मोटापा, उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसे जोखिमों को नियंत्रित करने में भी सहायक है। योग मन और शरीर के बीच संतुलन स्थापित करता है। वहीं दौड़ना, साइकिल चलाना, पैदल चलना और जिम में कसरत करना शरीर को सक्रिय और ऊर्जावान बनाए रखने में सहायता करता है। इसलिए फिटनेस को केवल बाहरी सुंदरता से जोड़कर देखना उचित नहीं है।

संतुलित खानपान भी है फिटनेस की पहली शर्त

सर्दियों में व्यायाम के साथ खानपान पर नियंत्रण भी उतना ही आवश्यक है। ठंड में भूख अधिक लग सकती है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि आवश्यकता से ज्यादा खाया जाए। मौसमी फल-सब्जियां, हरी सब्जियां, दालें, पर्याप्त प्रोटीन और सूखे मेवे संतुलित मात्रा में भोजन का हिस्सा होने चाहिए। तली-भुनी चीजों और अत्यधिक मिठाइयों से दूरी रखना बेहतर है। ठंड में प्यास कम लगने के बावजूद पर्याप्त पानी पीना भी आवश्यक है। आखिरकार फिटनेस का रास्ता केवल जिम से नहीं, रसोई में लिए गए निर्णयों से भी होकर गुजरता है। हालांकि फिटनेस के नाम पर जल्द परिणाम पाने की मानसिकता भी नुकसान पहुंचा सकती है। कुछ ही दिनों में वजन घटाने या मांसपेशियां बनाने की चाह में लोग अपनी क्षमता से अधिक व्यायाम करने लगते हैं। यह उत्साह कई बार चोट और स्वास्थ्य सम्बंधी परेशानियों का कारण बनता है। व्यायाम की शुरुआत अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार होनी चाहिए। ठंड में मांसपेशियों को तैयार करने के लिए वार्मअप विशेष रूप से आवश्यक है। शुरुआती दिनों में हल्की कसरत और पैदल चलने से शुरुआत कर प्रशिक्षक की सलाह से अभ्यास की कठिनाई बढ़ाई जा सकती है। हृदय या सांस सम्बंधी समस्या वाले लोगों को कठिन व्यायाम से पहले चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। संयम का अर्थ पीछे हटना नहीं, बल्कि सही दिशा में निरंतर आगे बढ़ना है।

समय नहीं, प्राथमिकताएं बदलने की आवश्यकता

फिटनेस की राह में सबसे बड़ी बाधा समय की कमी नहीं , हमारी प्राथमिकताएं होती हैं। मोबाइल पर घंटों बिताने, मनोरंजन और दूसरी गतिविधियों के लिए समय निकालने वाले लोग अपने शरीर के लिए आधा घंटा भी तय नहीं कर पाते। यह कैसी विडम्बना है कि हम अपने वाहन, घर और दूसरी सुविधाओं की देखभाल के लिए समय निकालते हैं, लेकिन जिस शरीर के सहारे पूरा जीवन जीना है, उसकी उपेक्षा करते हैं! स्वास्थ्य कोई विलासिता नहीं, जीवन की आधारभूत आवश्यकता है। प्रतिदिन 30 से 45 मिनट की शारीरिक गतिविधि भी लम्बे समय में बड़ा बदलाव ला सकती है।

परिश्रम के साथ विश्राम भी आवश्यक

इस प्रक्रिया में पर्याप्त नींद और विश्राम का भी महत्व है। समय पर सोना, निश्चित समय पर उठना और शरीर को उसकी आवश्यकता के अनुसार आराम देना आश्यक है। व्यायाम के बाद शरीर को रिकवरी का अवसर देना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना उसे सक्रिय रखना। अनुशासन का अर्थ शरीर पर अत्याचार करना नहीं, उसकी क्षमता को समझते हुए उसे बेहतर बनाना है। सर्दियां मौसम बदलने का नाम नहीं हैं, बल्कि स्वयं को बदलने का अवसर भी हैं।

●●●





ऋचा सिंह

कहीं बाजरे की रोटी की खुशबू तो कहीं सरसों के साग की महक तो कहीं उंधियू और मेथी के थेपले तो कहीं तिल व गुड़ से बने लड्डु मन को एक सुखद अनुभूति से भर देती हैं। ये मौसम, स्वाद व स्वास्थ्य का उत्सव भी है।

मौसम में लें खानपान का मजा

भारत में ऋतुओं का परिवर्तन केवल मौसम का बदलना नहीं, बल्कि जीवनशैली, खानपान और लोकसंस्कृति के रंगों का बदलना भी है। विशेषकर सर्दियों का मौसम अपने साथ एक अलग ही उल्लास लेकर आता है। ठंडी हवाओं के बीच धूप सेंकने का आनंद, अलाव के आसपास बैठकर गपशप करना और घरों में बनते पारम्परिक व्यंजनों की खुशबू मन को एक सुखद अनुभूति से भर देती है। वास्तव में, सर्दी केवल गर्म कपड़ों का मौसम नहीं, बल्कि देशी खानपान के स्वाद और स्वास्थ्य का उत्सव है।भारतीय परम्परा में खानपान सदैव ऋतु और प्रकृति के अनुकूल रहा है। हमारे पूर्वजों ने अपने अनुभवों से ऐसी खाद्य परम्पराएं विकसित कीं, जो मौसम की आवश्यकताओं के अनुरूप थीं। सर्दियों में शरीर को ऊर्जा और गर्माहट देने वाले खाद्य पदार्थों का विशेष महत्त्व होता है। यही कारण है कि इस मौसम में गुड़, तिल, मूंगफली, बाजरा, मक्का, सरसों, मेथी, गाजर और विभिन्न प्रकार के सूखे मेवों का सेवन अधिक किया जाता है। सर्दियों में पाचन क्षमता सामान्यतः बेहतर अनुभव हो सकती है, इसलिए पौष्टिक और अपेक्षाकृत गरिष्ठ भोजन का आनंद भी लिया जाता है। हालांकि संतुलित मात्रा और व्यक्तिगत स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी आवश्यक है।

सर्दियों के पारम्परिक व्यंजनों की बात हो और उत्तर भारत की सरसों का साग तथा मक्के की रोटी का उल्लेख न हो, ऐसा सम्भव नहीं। ऊपर से सफेद मक्खन और गुड़ का छोटा-सा टुकड़ा इस भोजन का स्वाद कई गुना बढ़ा देता है। उत्तर प्रदेश में बाजरे की रोटी, बथुए का साग, गाजर का हलवा, तिल के लड्डू, गुड़ की पट्टी और मूंगफली की गजक सर्दियों की पहचान हैं। राजस्थान में बाजरे की राबड़ी, दाल-बाटी और गोंद के लड्डू का अपना विशेष स्थान है। गुजरात में उंधियू और मेथी के थेपले सर्दियों के स्वाद को समृद्ध बनाते हैं। महाराष्ट्र में तिलगुल और बाजरे की भाकरी, बिहार में लिट्टी-चोखा तथा तिलकुट, बंगाल में खजूर के गुड़ से बनी मिठाइयां और दक्षिण भारत में रागी तथा अन्य स्थानीय अनाजों से बने व्यंजन अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। भारत का प्रत्येक प्रदेश अपनी जलवायु, कृषि और लोकपरम्पराओं के अनुरूप खानपान की अनूठी विरासत संजोए हुए है। सर्दियों का एक विशेष आकर्षण है घर में बनने वाले पारम्परिक पकवान। दादी-नानी के हाथों के बने मेथी के लड्डू, गोंद के लड्डू, पंजीरी, तिल की गजक और गुड़ की खीर केवल खाद्य पदार्थ नहीं, बल्कि पीढ़ियों से हस्तांतरित होता घरेलू ज्ञान है। इन व्यंजनों में स्वाद के साथ अपनापन और पारिवारिक स्नेह भी घुला होता है। आज बाजार में अनेक प्रकार के पैकेटबंद खाद्य पदार्थ उपलब्ध हैं, लेकिन घर की रसोई में तैयार किए गए ताजे पारम्परिक भोजन की बात ही अलग है।

गांव की सर्दियों का तो अपना ही संसार होता है। सुबह-सुबह खेतों पर उतरती ओस, चारों ओर फैली धुंध, सरसों के पीले फूलों से सजे खेत और आंगन में खिलती गुनगुनी धूप मन

को अनायास ही अतीत की ओर ले जाती है। कहीं चूल्हे पर रोटी सिक रही होती है, तो कहीं लोहे की कड़ाही में गुड़ और तिल से पकवान तैयार हो रहे होते हैं। घर के सभी सदस्य एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। खेत से ताजा आया बथुआ, पालक, मूली, गाजर और मटर भोजन का स्वाद बढ़ा देते हैं। चूल्हे की आंच पर बनी बाजरे की रोटी, उस पर लगा देसी घी और साथ में गुड़ का स्वाद आज भी गांव की स्मृतियों को जीवंत कर देता है। गांव में खानपान केवल भूख मिटाने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक सम्बंधों को मजबूत करने का अवसर भी होता है। पड़ोसियों के घर से पकवानों का आदान-प्रदान, रिश्तेदारों का अचानक आ जाना और सबके साथ बैठकर भोजन करना सामूहिक जीवन का सुंदर चित्र प्रस्तुत करता है। इन छोटी-छोटी परम्पराओं में जो आत्मीयता और आनंद छिपा है, वह आधुनिक जीवन की भागदौड़ में कहीं पीछे छूटता जा रहा है। आज आवश्यकता है कि हम अपनी पारम्परिक खाद्य संस्कृति को केवल पुरानी यादों तक सीमित न रखें। स्थानीय अनाज, मौसमी सब्जियां, मोटे अनाज और घर में बने पौष्टिक व्यंजनों को अपने भोजन का हिस्सा बनाएं। इससे न केवल स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ेगी, बल्कि स्थानीय किसानों, पारम्परिक पाककला और हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी प्रोत्साहन मिलेगा। सच तो यह है कि सर्दियों का वास्तविक आनंद महंगे व्यंजनों में नहीं, बल्कि उस सादगी में छिपा है, जहां मिट्टी की सौंधी खुशबू, चूल्हे की गर्माहट, अपनों का साथ और देशी भोजन का स्वाद एक साथ मिलते हैं। सरसों के साग की खुशबू, गुड़ की मिठास और बाजरे की रोटी का स्वाद हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। सर्दी का मौसम हमें याद दिलाता है कि हमारी परम्पराएं केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान जीवन को स्वस्थ, सहज और आनंदमय बनाने का आधार भी हैं।



स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

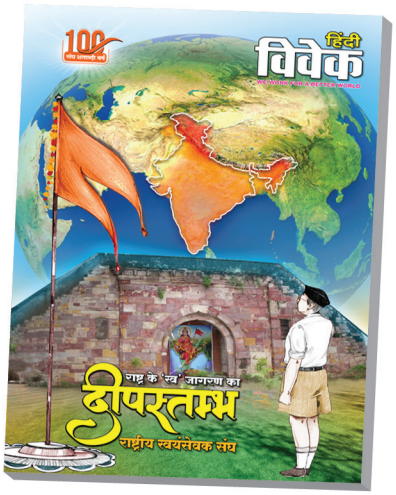

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483

भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

50+ YEARS OF MOMENTUM

हर पल PROGRESSIVE

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

तुमच्या मेहनतीला आर्थिक चाकांची साथ.

Light Commercial Vehicle
लोनसह स्वप्नांना द्या नवी गती !



कर्ज रक्कम:
₹ १० लाखांपर्यंत*

व्याजदर:
१०%* द. सा. द. शे.

परतफेड कालावधी:
५ वर्षांपर्यंत*

किमान प्रक्रिया शुल्क | जलद कर्ज मंजुरी व वितरण प्रक्रिया

* अटी व शर्ती लागू.

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.bank.in KJSBank

मिलावट का घिनौना खेल

आज देश में बोतलबंद पानी से लेकर दूध, घी, पनीर, खाद्य तेल, मसाले और मिठाइयों तक में मिलावट तथा नकली उत्पादों का कारोबार उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य के लिए चुनौती बनता जा रहा है।







स्वास्थ्य



महेंद्र तिवारी

भोजन मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। यह केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन की आधारशिला है। लेकिन जब जीवन देने वाले खाद्य पदार्थ ही बीमारियों का कारण बनने लगें, तब यह किसी एक व्यक्ति की समस्या नहीं, बल्कि पूरे समाज और व्यवस्था के लिए गम्भीर चिंता का विषय बन जाता है।

पानी से लेकर रसोई तक मिलावट का जाल

जिस पानी को जीवन का आधार माना जाता है, उसकी शुद्धता भी आज सवालों के घेरे में है। बोतलबंद पानी के नाम पर बिकने वाले कुछ उत्पादों में निर्धारित गुणवत्ता और स्वच्छता मानकों की अनदेखी की आशंका बनी रहती है। इसी प्रकार दूध में पानी, यूरिया, डिटर्जेंट और अन्य हानिकारक पदार्थों की मिलावट, घी में सस्ते वनस्पति वसा का प्रयोग, पनीर में गैरमानक सामग्री तथा खाद्य तेलों में दूसरे तेलों की मिलावट उपभोक्ताओं के भरोसे को तोड़ रहे हैं। मिलावट का यह खेल केवल आर्थिक धोखाधड़ी नहीं है। दूषित पानी और खाद्य पदार्थों से पेट तथा आंतों के संक्रमण, दस्त, उल्टी और खाद्य विषाक्तता जैसी समस्याएं हो सकती हैं। कुछ हानिकारक रासायनिक पदार्थों के लंबे समय तक सेवन से गुर्दे, यकृत और शरीर के अन्य अंगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों के लिए इसका खतरा और अधिक गम्भीर हो सकता है।

खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या कितनी व्यापक है, इसका अंदाजा सरकारी आंकड़ों से लगाया जा सकता है। भारत सरकार द्वारा फरवरी 2026 में संसद में प्रस्तुत जानकारी के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2024-25 में दूध और दुग्ध उत्पादों के 33,405 नमूनों का परीक्षण किया गया। इनमें 12,780 नमूने निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं पाए गए। इसी अवधि में दोषी खाद्य कारोबारियों के विरुद्ध 12,057 मामले शुरू किए गए।

ये आंकड़े केवल प्रशासनिक कार्रवाई का विवरण नहीं हैं, बल्कि इस बात का संकेत भी हैं कि खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में अभी बहुत काम किया जाना बाकी है। सवाल यह है कि जब बड़ी संख्या में नमूने गुणवत्ता मानकों पर खरे नहीं उतरते, तब आम उपभोक्ता किस आधार पर अपनी थाली में परोसे जा रहे भोजन की शुद्धता पर भरोसा करे?

कानून से अधिक आवश्यक है निष्पक्ष क्रियान्वयन

देश में खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 और उससे सम्बंधित नियम मौजूद हैं। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण तथा राज्यों के खाद्य सुरक्षा विभागों की जिम्मेदारी है कि बाजार में बिकने वाले खाद्य पदार्थ निर्धारित मानकों के अनुरूप हों। इसके बावजूद मिलावट का कारोबार जारी रहना शासन-प्रशासन की कार्यप्रणाली पर प्रश्न खड़े करता है।

केवल त्योहारों के अवसर पर छापेमारी करना और कुछ

नमूने जब्त कर लेना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता ऐसी निरंतर व्यवस्था की है जिसमें उत्पादन केंद्रों, गोदामों, परिवहन व्यवस्था और खुदरा बाजारों तक नियमित निगरानी हो। दोषियों के विरुद्ध बिना किसी राजनीतिक दबाव, आर्थिक प्रभाव अथवा व्यक्तिगत पक्षपात के कार्रवाई होनी चाहिए। जब्त किए गए खाद्य पदार्थों, प्रयोगशाला जाँच की रिपोर्ट, लगाए गए जुर्माने और दोषियों को मिली सजा का विवरण सार्वजनिक किया जाना चाहिए।

तुकाराम मुंढे से मिलती है दृढ़ प्रशासन की प्रेरणा

इनकी कार्यशैली से यह संदेश मिलता है कि प्रशासनिक पद केवल अधिकारों के उपयोग का माध्यम नहीं, बल्कि नागरिकों के जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा का दायित्व भी है। हालांकि ऐसी कार्रवाई में निष्पक्षता, नियमों का पालन और न्यायिक समीक्षा का सम्मान भी अनिवार्य है। कठोरता का अर्थ मनमानी नहीं, बल्कि कानून के अनुसार निर्भीक कार्रवाई होना चाहिए।

मिलावट मुक्त भारत के लिए शून्य सहनशीलता नीति

अब समय आ गया है कि खाद्य पदार्थों में मिलावट और नकली उत्पादों के कारोबार के विरुद्ध शून्य सहनशीलता की स्पष्ट नीति अपनाई जाए। इसके लिए खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं की संख्या और क्षमता बढ़ानी होगी। प्रत्येक जिले में त्वरित जांच की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए। मोबाइल खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं को बाजारों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाया जाए। बार-बार नियम तोड़ने वाले कारोबारियों के लाइसेंस निरस्त करने के साथ गम्भीर मामलों में कठोर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

उपभोक्ताओं को भी जागरूक होना होगा। खाद्य पदार्थ खरीदते समय निर्माण और समाप्ति तिथि, पैकेट की सील, प्रमाणन चिह्न और निर्माता का विवरण अवश्य देखना चाहिए। संदिग्ध उत्पादों की शिकायत सम्बंधित खाद्य सुरक्षा विभाग तक पहुंचानी चाहिए।

शुद्ध भोजन कोई विशेष सुविधा नहीं, नागरिक अधिकार है

सरकार की जिम्मेदारी केवल खाद्यान्न उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण भोजन सुनिश्चित करना भी है। सवाल यह है कि बाजार में उपलब्ध खाद्य पदार्थ कितना सुरक्षित है। जब तक शासन की इच्छाशक्ति, प्रशासन की जवाबदेही और नागरिकों की जागरूकता एक साथ काम नहीं करेंगे, तब तक मिलावट के इस कारोबार पर प्रभावी रोक लगाना कठिन होगा। अब आवश्यकता आश्वासनों की नहीं, पारदर्शी, निष्पक्ष और परिणामोन्मुखी कार्रवाई की है, ताकि देश का प्रत्येक नागरिक बिना भय और संदेह के अपनी थाली में रखा भोजन ग्रहण कर सके। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

Combo Offer

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।
- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

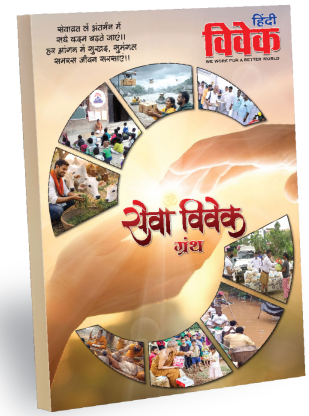



हिंदी विवेक की पंचवार्षिक सदस्यता
मूल्य ₹ 500 + मूल्य ₹ 1800 + सेवा विवेक ग्रंथ मूल्य ₹ 700
कुल : ₹ 3000/-

आपको मिलेगा मात्र ₹ 2500 में

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।
Draft or Cheque should be drawn in the name of: HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK
Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694
UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और पेमेंट करने में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com



जिंदगी की नहीं मौत का पर्चा कटता है



सतीश सिंह

उत्पाद

युवाओं को समझना होगा कि स्वस्थ शरीर बनाने का कोई चमत्कारिक शॉर्टकट नहीं होता है। संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, धैर्य और अनुशासित जीवनशैली ही अच्छे स्वास्थ्य के आधार हैं।

महाराष्ट्र के खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) ने 20 नवम्बर, 2026 को हेल्थ सप्लीमेंट्स और न्यूट्रास्यूटिकल उत्पादों के सम्बंध में राज्यव्यापी अनुपालन आदेश जारी किया है। एफडीए कमिश्नर तुकाराम मुंढे ने स्पष्ट किया है कि जिम संचालकों को अपने परिसर में सप्लीमेंट्स बेचने के लिए भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) का वैध लाइसेंस अथवा नियमानुसार पंजीकरण कराना होगा। उत्पादों के लेबल, विज्ञापनों और सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रामक स्वास्थ्य सम्बंधी दावे नहीं किए जा सकेंगे। नियमों का उल्लंघन करने वाले निर्माताओं, वितरकों, विक्रेताओं और प्रचार करने वाले इन्फ्लुएंसर्स के खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी। एफडीए ने 13 नवम्बर, 2026 को 6 प्रशासनिक संभागों में 17 प्रतिष्ठानों की जांच करके लगभग 1.39 करोड़ रुपए के उत्पाद जब्त किए थे। कुछ उत्पादों में ऐसे तत्व पाए गए, जिनके अनुमोदन सम्बंधी आवेदनों को एफएसएसएआई ने अस्वीकार कर दिया था।

कितने सुरक्षित हैं हेल्थ सप्लीमेंट्स

हेल्थ सप्लीमेंट्स का मूल उद्देश्य शरीर में पोषक तत्वों की कमी को दूर करना है। हालांकि, इनका अनियंत्रित सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। अधिक मात्रा में प्रोटीन, कैफीन, विटामिन, मिनरल्स और अन्य उत्तेजक पदार्थों का सेवन पाचन सम्बंधी समस्याओं, अनिद्रा, उच्च रक्तचाप, अनियमित धड़कन तथा लिवर और किडनी सम्बंधी विकारों का कारण बन सकता है। सबसे अधिक खतरा उन उत्पादों से है, जिनमें अघोषित एनाबॉलिक स्टेरॉयड, हार्मोन या प्रतिबंधित रसायनों की मिलावट की जाती है। अप्रैल 2024 में चिकित्सा शोध पत्रिका 'मेडिसिन' में प्रकाशित एक भारतीय अध्ययन में बाजार में उपलब्ध 36 प्रोटीन सप्लीमेंट्स की जांच की गई थी। इनमें से 25 यानी 69.4 प्रतिशत उत्पादों में प्रोटीन की मात्रा पैकेट पर किए गए दावों से कम पाई गई। कुछ उत्पादों में भारी धातुओं, कीटनाशकों और फफूंदजनित विषैले पदार्थों की मौजूदगी भी दर्ज की गई। हालांकि, सीमित नमूनों पर आधारित इस अध्ययन के निष्कर्षों को समूचे उद्योग पर लागू नहीं किया जा सकता।

युवाओं में हार्ट अटैक का खतरा

जिम में व्यायाम करते हुए युवाओं को हार्ट अटैक आने की घटनाएं चिंता का विषय हैं। मांसपेशियों को तेजी से विकसित करने के लिए एनाबॉलिक स्टेरॉयड का प्रयोग हृदय की मांसपेशियों में असामान्य वृद्धि, रक्तचाप बढ़ने, खराब कोलेस्ट्रॉल में वृद्धि और रक्त के थक्के बनने का जोखिम बढ़ा सकता है। वहीं, अत्यधिक

कैफीन और अन्य उत्तेजक पदार्थों वाले प्री-वर्कआउट सप्लीमेंट्स हृदय पर अतिरिक्त दबाव डाल सकते हैं।

वर्ष 2025 में 'सर्कुलेशन' पत्रिका में प्रकाशित डेनमार्क के एक अध्ययन में एनाबॉलिक स्टेरॉयड का प्रयोग करने वाले 1,189 पुरुषों की तुलना 59,450 अन्य पुरुषों से की गई। लगभग 11 वर्षों तक किए गए अध्ययन में स्टेरॉयड का प्रयोग करने वालों में हार्ट अटैक का जोखिम तीन गुना, हृदय की मांसपेशियों से सम्बंधित बीमारी कार्डियोमायोपैथी का जोखिम लगभग 9 गुना और हार्ट फेल्योर का जोखिम लगभग 3.6 गुना अधिक पाया गया। वर्ष 2024 में प्रकाशित एक मेडिकल केस रिपोर्ट के अनुसार, एक 25 वर्षीय युवक को जिम में व्यायाम करने के बाद सीने में तेज दर्द हुआ। वह 8 महीने से प्री-वर्कआउट सप्लीमेंट ले रहा था। सोशल मीडिया से प्रभावित होकर उसने कुछ दिन पहले सप्लीमेंट का पाउडर बिना पानी में मिलाए खाना शुरू कर दिया था। जांच में उसके हृदय की एक प्रमुख धमनी पूरी तरह अवरुद्ध पाई गई। एंजियोप्लास्टी करके उसमें स्टेंट लगाना पड़ा।

हालांकि, युवाओं में होने वाले सभी हार्ट अटैक के लिए सप्लीमेंट्स को जिम्मेदार ठहराना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उचित नहीं होगा। आनुवंशिक हृदय रोग, मधुमेह, धूम्रपान, उच्च रक्तचाप, मोटापा, अत्यधिक तनाव और पहले से मौजूद हृदय सम्बंधी विकार भी इसके कारण हो सकते हैं।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

पुस्तकों का खजाना

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

10 से अधिक प्रतियां बुक करने पर विशेष छूट दी जाएगी



Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

• Bank Details : State Bank of India • Branch : Charkop,
• A/C No. : 00000043884034193 • IFSC Code : SBIN0011694

पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

प्रशांत : 9594961855 / भोला : 9930016472 / संदीप : 7045961331
कार्यालय : 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

किडनी और लिवर पर दुष्प्रभाव

वर्ष 2010 में 'जर्नल ऑफ द अमेरिकन सोसायटी ऑफ नेफ्रोलॉजी' में प्रकाशित अध्ययन में लम्बे समय से एनाबॉलिक स्टेरॉयड का प्रयोग करने वाले 10 बॉडी बिल्डरों में किडनी की गम्भीर समस्याएं पाई गईं। इनमें 9 लोगों की किडनी में फोकल सेगमेंटल ग्लोमेरुलोस्क्लेरोसिस नामक बीमारी की पुष्टि हुई, जिसमें रक्त को छानने वाली सूक्ष्म संरचनाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। वर्ष 2015 में 'क्लिनिकल किडनी जर्नल' में प्रकाशित एक अध्ययन में चार बॉडी बिल्डरों में किडनी को अचानक गम्भीर क्षति पहुंचने के मामले दर्ज किए गए। ये लोग एनाबॉलिक स्टेरॉयड के साथ अत्यधिक मात्रा में प्रोटीन और क्रिएटिन का सेवन कर रहे थे। इनका प्रयोग बंद करने के 4 सप्ताह बाद उनकी किडनी की कार्यक्षमता में सुधार दर्ज किया गया। हालांकि, कुछ मरीजों में किडनी के ऊतकों को दीर्घकालिक क्षति पहुंचने के संकेत भी मिले। अत्यधिक व्यायाम से मांसपेशियों के टूटने की स्थिति, जिसे रैब्डोमायोलिसिस कहते हैं, भी किडनी को नुकसान पहुंचा सकती है।

भारत-नेपाल सम्बंधों में एक नया मोड़

युग



मृत्युंजय दीक्षित

नेपाल के प्रधान मंत्री की भारत यात्रा के दौरान भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी द्विपक्षीय वार्ता भी सम्पन्न हुई। इस अवसर पर भारत और नेपाल के मध्य 8 ऐतिहासिक समझौते हुए।

नेपाल के साथ भारत के सम्बन्ध केवल राजनैतिक ही नहीं वरन सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। नेपाल के पूर्व प्रधान मंत्री के. पी. शर्मा ओली तथा अन्य का झुकाव चीन की तरफ दिखता था किंतु इसके विपरीत नई विचारधारा के नए प्रधान मंत्री बालेंद्र शाह ने भारत को महत्ता दी। भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने सामाजिक व सांस्कृतिक सम्बंधों को नया आयाम देते हुए कहा कि भारत के धाम और अयोध्या के राम नेपाल के बिना अधूरे हैं जबकि नेपाल के प्रधान मंत्री बालेंद्र शाह ने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को नेपाल यात्रा के लिए आमंत्रित करते हुए भारत की आम जनता को नेपाल के धामों व पर्यटक स्थलों की यात्रा के लिए आमंत्रित किया।

नेपाल की अर्थव्यवस्था का एक बहुत बड़ा हिस्सा पर्यटन पर ही आधारित रहा है किंतु विगत दिनों रही राजनैतिक अस्थिरता व प्राकृतिक आपदाओं के कारण पर्यटन पर विपरीत प्रभाव पड़ा और अर्थव्यवस्था कमजोर स्थिति में पहुंच गई। पशुपतिनाथ और मनोकामना के भक्त भारतीय तीर्थयात्री नेपाल की अर्थव्यवस्था को फिर से मजबूती प्रदान कर सकते हैं। वर्तमान समय में भारत और नेपाल के मध्य बातचीत की शुरूआत सुरक्षा के दृष्टिकोण से भीअत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत व नेपाल की सीमा लम्बी व खुली हुई है।



बालेंद्र शाह की भारत यात्रा के अवसर पर भारत और नेपाल के मध्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक सम्बंधों को मजबूती प्रदान करने के लिए प्रभु राम के अयोध्या धाम और माता जानकी के जनकपुर धाम के बीच साप्ताहिक ट्रेन आरम्भ की गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व बालेन्द्र शाह ने संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को रवाना किया। यह ट्रेन सप्ताह में अभी केवल एक दिन ही चलेगी किंतु बाद में यह नियमित हो जाएगी। ट्रेन का नाम सरयू कमला एक्सप्रेस रखा गया है क्योंकि अयोध्या धाम सरयू नदी के तट पर स्थित है और नेपाल का जनकपुर धाम कमला नदी के किनारे स्थित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह व उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ की अयोध्या में उपस्थिति के बीच भारत नेपाल सम्बंधो को मजबूती प्रदान करने के लिए साप्ताहिक ट्रेनसेवा शुरू तो हो गई है किंतु इसके पीछे कई संकट भी सामने आकर खड़े हो गए हैं। भारत-नेपाल नई ट्रेन सेवा से तस्करी, ड्रग्स और घुसपैठ का खतरा बढ़ सकता है। यद्यपि इस ट्रेन सेवा से यात्रियों, श्रद्धालुओं और व्यापारियों को सुविधा मिलेगी लेकिन इसके साथ सीमा सुरक्षा को लेकर कई गम्भीर सवाल उठ रहे हैं। भारत -नेपाल की खुली सीमा पर अवैध घुसपैठ, ड्रग्स तस्करी मानव तस्करी और अवैध हथियारों की तस्करी जैसी गतिविधियों को रोकना पहले ही सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ी चुनौती बने हुए हैं। ऐसे में प्रश्न उठ रहा है कि क्या अंतरराष्ट्रीय ट्रेन सेवा में यात्रियों और उनके सामान की पर्याप्त जांच सम्भव होगी? रेलवे स्टेशनों पर एयरपोर्ट जैसी सुरक्षा

बालेंद्र शाह भारत की दो दिवसीय यात्रा पर नई दिल्ली आए, उनकी इस यात्रा से भारत -नेपाल सम्बंधों में एक नया अध्याय प्रारम्भ होने का स्पष्ट संदेश प्राप्त हो रहा है।

व्यवस्था बनाई जाएगी? क्या अवैध घुसपैठ रोकने के लिए विशेष निगरानी और आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाएगा? भारत ने पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ भी ट्रेन चलाई थी किंतु रोकना पड़ा था। नेपाल भी अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का लाचिंग पैड बना हुआ है। नेपाल में पाकिस्तान, बांग्लादेश और दुबई से सीधी हवाई सेवाएं प्रतिदिन आती हैं। हजारों पाकिस्तानी नेपाल के रास्ते घुसपैठ कर रहे हैं। अयोध्या से जनकपुर क्या सिर्फ हिंदू श्रद्धालु ही आएंगे-जाएंगे?

द्विपक्षीय वार्ता के बाद भारत और नेपाल ने 8 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जिनमें सिविल सेवा क्षमता प्रशिक्षण, अंतरिक्ष अनुसंधान ,स्वास्थ्य और चिकित्सा, शहरी विकास तथा आयुर्वेद और पारम्परिक चिकित्सा जैसे क्षेत्र हैं। भारत ने अगस्त 2026 में नेपाल में आई प्राकृतिक आपदा से नष्ट हुए क्षेत्रों में पुर्ननिर्माण के लिए 24,000 करोड़ नेपाली रुपए (लगभग 15,000 करोड़ भारतीय रुपए) के बराबर आर्थिक सहायता पैकेज की घोषणा की है।

भारत और नेपाल के मध्य हुए समझौते नेपाल की नई पीढ़ी में भारत विरोधी भावना को कम करेंगे ऐसा अनुमान है। इस कड़ी में भारत नेपाल में वहां के युवाओं के लिए आईआईटी का कैंपस स्थापित करेगा। नेपाल में स्टार्टअप इनक्यूबेटर और इनोवेशन हब भी बनाया जाएगा। इसका उद्देश्य नेपाल के युवाओं को उच्च तकनीक, शिक्षा, शोध और उद्यमिता के बेहतर अवसर उन्हीं के देश में उपलब्ध कराना है। प्रधान मंत्री मोदी ने कहा कि भारत नेपाल के युवाओं की प्रतिभा और उनके सपनों को साकार करने मे भागीदार बनना चाहता है। भारत ने नेपाल में फूड प्रोसेसिंग और वैल्यू एडिशन को बढ़ावा देने के लिए एग्रो इंडस्ट्रियल पार्क बनाने में भी सहायता करेगा।

प्रधान मंत्री मोदी ने नेपाल के साथ सांस्कृतिक रिश्तों को मजबूती प्रदान करने के लिए, प्रधान मंत्री बालेंद्र शाह को कलमकारी सम्पूर्ण रामायण पेंटिग, चंदन पेटिका में रखा बनारसी ब्रोकेड स्टोल और गंगाजल का कलश भेंट किया। वहीं नेपाल के प्रधान मंत्री बालेंद्र शाह ने भारत के प्रधान मंत्री को रुद्राक्ष की माला भेंट की जिसका शिवभक्त नरेंद्र मोदी के लिए विशेष महत्व है। नेपाल के प्रधान मंत्री ने भारत की इस बात के लिए प्रशंसा की कि भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जो नेपाल की हर सम्भव सहायता के लिए सदा तत्पर रहता है तथा उन्होंने अगस्त 2026 में आई बाढ़ के दौरान त्वरित सहायता प्रदान करने के लिए भारत को धन्यवाद दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक



पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य



भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।



सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।



सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।



सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।



इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।



आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

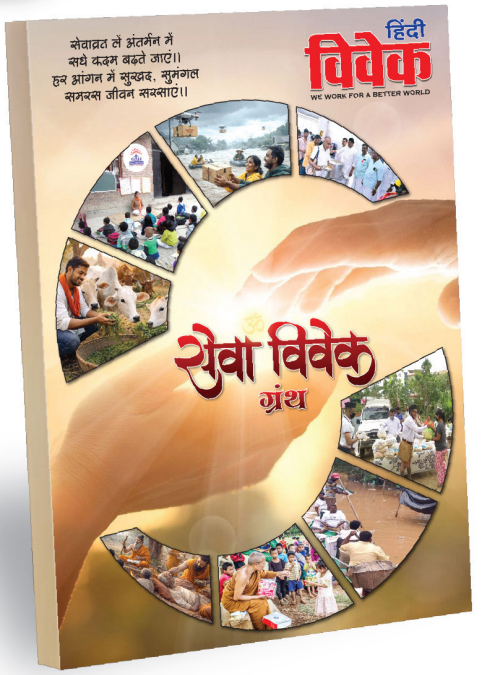

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com



वेणुगोपालन

मुख्य मंत्री जोसेफ विजय ने हिंदू आस्था का अपमान कर अपनी हिंदू विरोधी वास्तविक छवि दिखा दी है। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय के पुन: कठोर आदेश के बाद सीआरपीएफ की निगरानी में दीपाथून (दीप स्तम्भ) पर 'कार्तिगई दीपम' प्रज्जवलित किया जाएगा।

दीपाथून पर प्रज्जवलित होगी 'कार्तिगई दीपम'

तमिल फिल्मों में देवी और देवताओं के भक्त के रूप में, गरीबों की रक्षा के लिए माथे पर पर त्रिपुंड और तिलक लगाकर गुंडों, माफियाओं के विरुद्ध अकेले ही लड़ाई लड़ना, इस तरह के दृश्यों को सहजभाव से देखा जा सकता है। सवाल यह है कि फिल्मों में हिंदुओं के प्रति रक्षक की भूमिकाएं निभाने वाले फिल्मी हिरो क्या वास्तविक जीवन में वैसी ही भूमिका निभाते हैं?

ईसाई हो या मुसलमान दोनों ही मजहब के कलाकार हिंदुओं के बीच लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए अपना हिंदु नाम रख लेते हैं। तमिल फिल्म में उनके पूरे नाम जोसेफ विजय की जगह केवल विजय नाम का ही उपयोग किया गया। हिंदू नाम और फिल्मी मसीहा की छवि का लाभ राजनीति में मिला, ऐसे ही लोकप्रिय हीरो राजनीतिक क्षेत्र में अपना सिक्का स्थापित करने के लिए सेकुलरिज्म की खाल पहन लेते हैं। इसका एकदम ताजा उदाहरण है, तमिलनाडु के मुख्य मंत्री जोसेफ विजय का।

मदुरै के तिरुपरनकुंद्रम पहाड़ी पर स्थित कार्तिगई दीपम का मामला केवल एक दिया जलाए जाने का साधारण मामला नहीं है, यह सम्पूर्ण हिंदू समाज की आस्था से जुड़ा है। जोसेफ विजय की सेकुलरी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद भी हिंदुओं की धार्मिक परम्परा का पालन नहीं करने दिया।

सर्वोच्च न्यायालय ने 27 नवम्बर 2026 को तमिलनाडु के तिरुपरनकुंद्रम पहाड़ी स्थित 'दीपाथून' स्तम्भ पर शनिवार, 28 नवम्बर को दीपक जलाने का कड़ा आदेश



जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस विपुल पंचोली की पीठ ने दिया। विद्वान न्यायाधीशों ने कहा है कि 28 नवम्बर (शनिवार) को पहाड़ी की चोटी पर स्थित दीपाथून स्तम्भ पर पारम्परिक रूप से दीप जलाया जाए। सभी श्रद्धालुओं को दरगाह से चारों ओर कम से कम 50 मीटर की दूरी बनाए रखते हुए दीप जलाने की अनुमति दी गई है। पीठ ने पिछले आदेश (20 नवम्बर) की अवहेलना पर नाराजगी जताते हुए रुक्मि सुब्रमण्य स्वामी मंदिर के ट्रस्टी बोर्ड को तत्काल प्रभाव से निलम्बित कर दिया है। न्यायालय ने मंदिर का प्रशासन सम्भालने और आदेश का पालन कराने के लिए मद्रास उच्च न्यायालय के दो पूर्व जजों (जस्टिस एस. वैद्यनाथन और जस्टिस वी. पार्थिबन) को रिसीवर (प्रशासक) नियुक्त किया है। सर्वोच्च न्यायालय ने किसी भी अप्रिय घटना या व्यवधान को रोकने के लिए पूरी पहाड़ी की सुरक्षा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को सौंप दी है, क्योंकि तमिलनाडु पुलिस न्यायालय के आदेशों को लागू करने में विफल रही। सर्वोच्च न्यायालय ने सीआरपीएफ को निर्देश दिया है कि वह मंदिर और दरगाह में शांतिपूर्ण परिस्थिति को सुनिश्चित करे।

तिरुपरनकुंद्रम पहाड़ी के निचले हिस्से में एक शिव मंदिर और उचि पिल्लैयार मंदिर स्थित हैं, जबकि पहाड़ी की चोटी पर एक दरगाह है। दशकों से, मंदिर प्रबंधन द्वारा उचि पिल्लैयार मंदिर के पास पारम्परिक 'कार्तिगई दीपम' जलाया जाता रहा है। हालांकि, 2025 में हिंदुत्व समूहों ने कोर्ट में मांग की कि दीपक को 'दीपाथून' पर जलाया जाए जो पहाड़ी की चोटी पर स्थित एक पत्थर का खम्भा है, जो दरगाह से लगभग 50 मीटर दूर है।

सर्वोच्च न्यायालय ने 24 नवम्बर को तिरुपरनकुंद्रम के दीपाथून पर कार्तिगई दीपम न जलाए जाने को खुली अवज्ञा करार दिया और निर्देश दिया कि महीने के खत्म होने से पहले इसे जलाया जाए।

जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस विपुल पंचोली की पीठ मदुरै जिला कलेक्टर और अन्य अधिकारियों के खिलाफ अवमानना याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। इसके साथ ही, उस महीने के दौरान किसी अन्य दिन 'दीपाथून' (दीप स्तम्भ) पर दीपक जलाने की अनुमति मांगने वाली अर्जियों पर भी सुनवाई हो रही थी।

सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य के मुख्य सचिव को भी निर्देश दिया है कि वे 20 नवम्बर के आदेश का पालन न किए जाने के मामले में अदालत के सामने व्यक्तिगत रूप से पेश हों। न्यायालय ने पुलिस महानिदेशक, एचआरसीई सचिव और आयुक्त, मदुरै जिला कलेक्टर, पुलिस आयुक्त, पुलिस अधीक्षक, मंदिर प्रशासन और अन्य लोगों को अवमानना नोटिस जारी किए हैं। जस्टिस अरविंद कुमार ने टिप्पणी की, न्यायालय के आदेशों को कोई भी व्यक्ति कमजोर नहीं कर सकता, चाहे वह कोई भी हो। अगर कोई संवैधानिक अराजकता पैदा करने की कोशिश करता है, तो हम उसे ठीक कर देंगे।

न्यायालय ने अपने आदेश में कहा, जब तक न्यायालय खुद अपने आदेश में कोई बदलाव न करे, तब तक उसके आदेश को बातचीत का न्योता नहीं माना जा सकता। इसलिए जब आदेश का उल्लंघन होता है तो हम चुपचाप नहीं बैठ सकते।

न्यायालय ने कहा कि मंदिर के ट्रस्टियों द्वारा 'उची पिल्लयार' मंदिर में दीपक जलाने का प्रस्ताव पारित करना एक गम्भीर उल्लंघन था।

सर्वोच्च न्यायालय ने 20 नवम्बर को मंदिर प्रशासन द्वारा अधिकृत एक सीमित टीम को 24 नवम्बर को 'दीपाथून' पर दीपक जलाने की अनुमति दी थी, जो कि केवल एक बार के लिए था, लेकिन इसके बजाय दीपक को 'उची पिल्लयार' मंदिर के पास पारम्परिक स्थान पर जलाया गया। मदुरै कलेक्टर की रिपोर्ट के अनुसार प्रशासन ने सभी व्यवस्था कर लिए थे, लेकिन यह कार्यक्रम इसलिए नहीं हो सका क्योंकि मंदिर के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ने किसी टीम को अधिकृत नहीं किया था। 25 नवम्बर को सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल एक शुरुआती स्टेटस रिपोर्ट में मदुरै के जिला कलेक्टर निशांत कृष्ण ने कोर्ट को बताया कि उन्होंने तिरुपरनकुंद्रम पहाड़ी पर पत्थर के खम्भे पर दीपक जलाने की न्यायालय की अनुमति को लागू करने का प्रयास किया, लेकिन मंदिर के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ने इस रस्म को पूरा करने के लिए किसी टीम को अधिकृत नहीं किया। एएसआई की ओर से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा, 24 नवम्बर को एक निश्चित तरीके से ऐसा करने के लिए 'मैन्डमस'(आदेश) जारी किया गया था। राज्य प्रशासन सहित सभी को जिम्मेदारियां सौंपी गई थीं। इस आदेश में एएसआई को भी शामिल किया गया था। विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने इस मामले को गम्भीर माना है, उन्होंने कहा कि विहिप हिंदुओं की धार्मिक आस्था की लड़ाई सर्वोच्च न्यायालय तक लड़ेगी। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन न किए जाने पर तमिलनाडू के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर ने जोसेफ विजय की सरकार को नोटिस भेजकर जवाब मांगा है।

●●●

टाइम बम बनते बच्चे



दीपक कुमार द्विवेदी

खेलने-कूदने व मचलने की आयु में बच्चों की मानसिकता इतनी आक्रामक क्यों होती जा रही है यह सवाल खुद एक कटघरे में खड़ा है। इनकी मानसिकता इतनी क्रूर क्यों होती जा रही है? जो समाज के लिए चिंतनीय व विचारणीय है।

मुम्बई के कुर्ला पश्चिम स्थित प्रमोद महाजन गार्डन से एक ऐसी घटना हाल ही में सामने आई है जिसने समाज के सामने कई गम्भीर सवाल खड़े कर दिए हैं। वहां घूमने गए एक युवक और युवती को 8 से 10 नाबालिग लड़कों के समूह ने घेर लिया। पहले उन पर अश्लील टिप्पणियां की गईं और विरोध करने पर उनके साथ बेरहमी से मारपीट की गई। सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो में नाबालिगों की आक्रामकता स्पष्ट देखी जा सकती है कोई चप्पल से युवक को पीट रहा है, तो कोई युवती के सिर पर डंडे से वार कर रहा है। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर आठ नाबालिगों को किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष पेश किया है और अभिभावकों को नोटिस जारी किए हैं।

ऊपरी तौर पर यह घटना कानून-व्यवस्था या किशोर अपराध का एक सामान्य मामला लग सकता है, लेकिन इसकी जड़ें कहीं अधिक गहरी हैं। यह घटना प्रसिद्ध फिल्म 'शौय' में ब्रिगेडियर रुद्र प्रताप सिंह के उस चर्चित संवाद को सत्य सिद्ध करती दिखती है, जिसमें वे कहते हैं कि ये बच्चे नहीं हैं, टाइम बम हैं। आज यह प्रश्न और अधिक तीखा हो गया है कि ये बच्चे टाइम बम कैसे बनते हैं। बचपन की मासूमियत की जगह इतनी कम उम्र में घृणा, आक्रामकता और असहिष्णुता आखिर कहां से आ रही है और यह स्थिति कब और कैसे फट सकती है, इसे समझना बेहद आवश्यक है। इस पूरी स्थिति को समझने के लिए राजनीतिक इस्लाम और कट्टरपंथी मजहबी मानसिकता के ढ़ांचे को देखना होगा। हमारी सनातन परम्परा में आस्तिक और नास्तिक, हर विचार और हर चेतना को स्थान मिलता है, इसलिए हम व्यवहारिक स्तर पर सहजता से मान लेते हैं कि सभी रास्ते एक जैसे हैं। परंतु राजनीतिक इस्लाम की दृष्टि दुनिया को दो हिस्सों में बांटकर देखती है मोमिन और काफिर, यानी हम और वे। इस मजहबी सोच में यह धारणा गहराई







से बैठ जाती है कि उनके अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं है और जब तक पूरी दुनिया में इस्लाम नहीं फैल जाता, तब तक संघर्ष जारी रहेगा। कयामत, जन्नत, जहन्नुम और एक जीवन की अवधारणा के साथ-साथ बांटने वाली यह राजनीतिक सोच जब कम आयु से मन में भर दी जाती है, तो वह व्यक्ति को सह-अस्तित्व के बजाय टकराव की राह पर ले जाती है।

आज दुनिया के कई हिस्सों में सुधार की चर्चा चल रही है। अरब देशों में भी शासक वर्ग समय के साथ अपनी व्यवस्थाओं और पाठ्यक्रमों में बदलाव की बातें कर रहे हैं। लेकिन भारतीय उपमहाद्वीप में स्थिति अलग दिखाई देती है। यहां कई लोग अपनी मजहबी पहचान को अधिक प्रखर और कठोर दिखाने की होड़ में रहते हैं। हमारी पुरानी कहावत है कि नया मुल्ला प्याज ज्यादा खाता है, जिसका आशय यही है कि जब कोई व्यक्ति किसी

विचारधारा या पहचान को लेकर अत्यधिक अतिरेक दिखाता है, तो वह सामान्य संतुलन खो देता है। हमारे पूर्वजों ने सदियों पहले इस राजनीतिक और मजहबी फितरत को पहचाना था, लेकिन आज की पीढ़ी इस गहराई को समझने में चूक रही है। बच्चों के भीतर यह सोच कैसे पनपती है, इसका एक स्पष्ट उदाहरण रक्षा विशेषज्ञ मेजर गौरव आर्य ने अपने एक पॉडकास्ट में साझा किया है। कश्मीर के अनंतनाग में अपनी पोस्टिंग के अनुभव को याद करते हुए उन्होंने बताया कि जब वे बच्चों को टॉफियां दे रहे थे, तो वहां बुर्का पहने 6 वर्ष की एक बच्ची खड़ी थी। जब उन्होंने उससे पूछा कि बड़ी होकर क्या बनेगी, तो उस बच्ची ने कहा कि वह बड़ी होकर बच्चे पैदा करेगी और उन्हें जिहादी बनाएगी। इस पर मेजर गौरव आर्य ने यह सवाल उठाया कि हम सीमा पर पाकिस्तान या चीन से तो लड़ सकते हैं, लेकिन 6 वर्ष की उस बच्ची से कैसे लड़ेंगे। मुम्बई की घटना और अनंतनाग का यह प्रसंग दोनों ही दिखाते हैं कि यह विषय सामान्य नहीं है, बल्कि आंतरिक सुरक्षा से जुड़ा एक बड़ा संकट है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता।

जब हम यह देखते हैं कि यह सब कैसे होता है, तो संस्कारों और परिवेश का अंतर साफ दिखाई देता है। एक तरफ हमारे समाज में पारिवारिक और सामाजिक अनुशासन ढीला पड़ा है, घर के बड़ों या परम्परा की बातों का प्रभाव कम हुआ है। दूसरी तरफ मजहबी कट्टरपंथ का एक पूरा इकोसिस्टम काम करता दिखता है, जिसमें परिवार, मित्र, मस्जिद और मदरसे मिलकर बच्चों के मन को आकार देते हैं। मदरसों में पुरानी और कट्टरपंथी धारणाओं के साथ-साथ उम्माह की भावना को मजबूत किया जाता है। सीएए विरोध के समय शाहीन बाग में गूंजे नारे तेरा मेरा रिश्ता क्या, ला इलाहा इल्लल्लाह इसी मजहबी जुड़ाव को सामने लाते हैं, जहां राष्ट्र और कानून से ऊपर मजहबी पहचान को रखा जाता है।

यह स्थिति केवल एक घटना या एक कानून के सहारे सम्भलने वाली नहीं है। यह आंतरिक सुरक्षा का गम्भीर मामला है और इसमें गहराई से जांच की आवश्यकता है कि नाबालिगों को किस प्रकार कट्टर और हिंसक बनाया जा रहा है। साथ ही यह भी विचार करने की आवश्यकता है कि सरकारी संसाधनों और अल्पसंख्यक दर्जे के तहत मिलने वाली सुविधाओं का उपयोग किन संस्थाओं और गतिविधियों में हो रहा है। इस संकट से निपटने के लिए सरकार को सख्त नीति, निगरानी और कानूनी कार्रवाई करनी होगी, वहीं समाज को भी जागरूक, संगठित और सजग होना होगा।

●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क
₹ 500

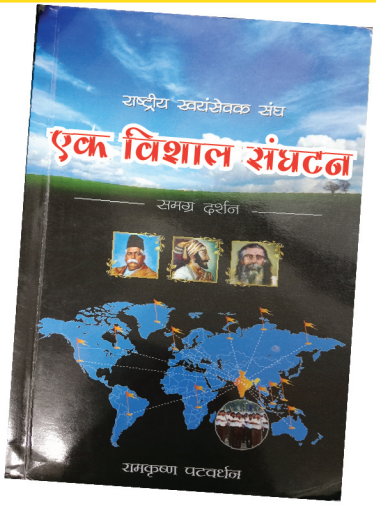

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

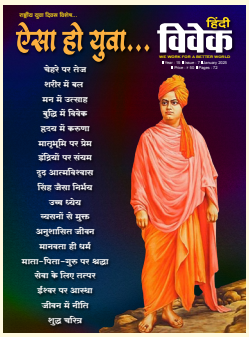



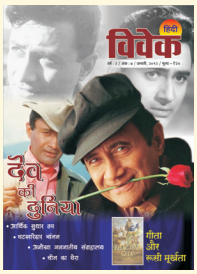

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

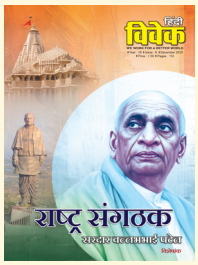





सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर – 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई – 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com



महिला हॉकी टीम ने रचा इतिहास

भारतीय महिला हॉकी टीम के लिए यह 2026 का साल अब तक सर्वश्रेष्ठ रहा है। भारत की महिला हॉकी टीम ने विगत बुधवार को जापान की महिला हॉकी टीम को 4 शून्य से पराजित किया और रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंची है।

भारत की महिला हॉकी टीम के लिए यह एक एतिहासिक क्षण था जब टीम इंडिया ने विगत बुधवार को जापान की महिला हॉकी टीम को 4 शून्य से पराजित किया था। इस जीत के साथ ही भारतीय महिला हॉकी टीम रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंची है और भारतीय हॉकी के लिए यह एक नया इतिहास रचने का अवसर है। इससे पहले जब टीम ने चीन को 6-2 से पराजित किया था तो उसे पांचवी रैंकिंग प्राप्त हुई थी। पिछले दो दिनों के भीतर भारत ने रैंकिंग में यह स्थान स्पेन और जर्मनी जैसी टीमों से आगे निकलकर प्राप्त किया है।

महिला एशियन चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम प्रतिभाशाली खिलाड़ी सलीमा टेटे की कप्तानी में यह सफलता प्राप्त कर रही है। अब तक पूरे टूर्नामेंट में टीम इंडिया अजेय रही है और अपने सभी 5 मुकाबले जीतकर सेमीफाइनल में जगह पक्की कर चुकी है। भारत का सेमीफाइनल मैच 27 नवम्बर को मलेशिया के साथ होना है। इस बार भी अगर भारतीय टीम फाईनल में पहुंचकर एशियन ट्रॉफी जीत लेती है तो यह भी टूर्नामेंट के इतिहास में पहली बार होगा जब किसी टीम को जीत की हैट्रिक लगाने का अनोखा रेकार्ड प्राप्त होगा।

महिला हॉकी के वैश्विक परिदृश्य में ओलंपिक चैम्पियन नीदरलैंड प्रथम स्थान पर काबिज है। विश्व चैंपियन अर्जेंटिना दूसरे स्थान पर है जबकि बेल्जियम तीसरे स्थान पर बना हुआ है। ये तीनों टीमें अंकों के आधार पर चौथे स्थान पर मौजूद भारत से मीलों आगे हैं।



राजीव रोहित

भारतीय टीम के लिए शीर्ष 3 में स्थान पाने के लिए एक लम्बी यात्रा तय करनी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि भारतीय महिला हॉकी टीम के लिए यह 2026 का साल अब तक सर्वश्रेष्ठ रहा है। इसी साल टीम इंडिया ने एफ आई एच नेशंस कप जीतने के अलावा विश्व कप में पांचवे स्थान पर रही। यह वर्ष 1974 के बाद अर्थात बयालिस सालों के बाद विश्व कप में उसका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। 44 सालों बाद एशियन खेलों में स्वर्ण पदक जीतकर भी टीम ने सफलता का एक नया अध्याय रच दिया।

अतीत के प्रदर्शनों की बात करें तो अक्टूबर 2003 में एफआईएच वर्ल्ड रैंकिंग शुरू होने के बाद से भारत की यह सबसे अच्छी रैंकिंग है। वर्ष 2018 में हमारी टीम रैंकिंग में 9वें स्थान पर थी। जबकि टोक्यो 2020 के ओलम्पिक खेल प्रतियोगिता में चौथे स्थान पर रहने से भारत को वर्ल्ड रैंकिंग में 8वां स्थान प्राप्त हुआ था। सफलता का एक और अहम कदम मई-जून 2022 में तब आया, जब एफआईएच प्रो लीग कैंपेन में टीम वर्ल्ड रैंकिंग छठे नंबर पर पहुंची। भारत ने 2023 में भी यह रैंकिंग फिर से हासिल की थी। 3 साल बाद मिली यह सफलता निश्चित रूप से भारतीय महिला हॉकी के इतिहास में एक बड़ा मील के पत्थर के समान है।

निश्चित रूप से सलीमा टेटे और उनके खिलाड़ियों के लिए बेहद खुशी की बात है। यह सफलता उन्हें और भी बेहतर करने की प्रेरणा के साथ-साथ हौसला भी प्रदान करेगी। भारतीय हॉकी के लिए गर्व का पल है। ●●●



प्रवीण सिन्हा

वैभव सूर्यवंशी ने लिस्ट-ए मैच में दो-हरा शतक जड़ कर सबसे कम आयु के क्रिकेटर बनने कीर्तिमान स्थापित किया है। भारतीय क्रिकेट में धूमकेतु की तरह वे चारों ओर चमक रहे हैं।



कीर्तिमानों की लगाई झड़ी

वैभव सूर्यवंशी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। फिर भी, बिहार के एक छोटे से गांव तेजपुर से एक सूर्यवंशी का निकलना, जिनकी ज्वाला विश्व क्रिकेट जगत को प्रकाशमान कर रही हो तो चर्चा होनी तय है। वह, भारतीय क्रिकेट में धूमकेतु की तरह उभरे वैभव सूर्यवंशी हैं। वैभव ने अब तक जीवन के 16 बसंत नहीं देखे हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में उनका नाम हर कुछ दिनों में शिखर पर दर्ज स्वर्ण पट्टिकाओं में अंकित होता जा रहा है। विश्व रिकॉर्ड्स ऐसे टूट रहे हैं जैसे एक युवा खिलाड़ी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को वीडियो गेम बनाकर रख दिया हो। हम सब भारतीयों के लिए वैभव की पारियां गौरवांवित कर रही हैं, लेकिन विश्व क्रिकेट के लिए वह 'बड़ा सिरदर्द' बनते जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वैभव आतिशी बल्लेबाजी से जुड़े तमाम विश्व कीर्तिमानों को ध्वस्त करने की राह पर अग्रसर हैं। कोई 5 माह पूर्व वैभव ने इंग्लैंड के खिलाफ मैनचेस्टर में अपना पदार्पण टी-20 मैच खेलते हुए सबसे कम आयु (15 साल 99 दिन) के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाले भारतीय क्रिकेटर बने। सुर्खियों में आ चुके वैभव ने उसके बाद से पीछे मुड़कर नहीं देखा है। युवा वैभव में भविष्य का उभरता सितारा बनने के सारे गुण मौजूद हैं। वैभव ने जिस धमाकेदार अंदाज में आईपीएल 2026 में रिकॉर्डों की झड़ी लगाई, जिस अंदाज में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया, जिस नई आतिशी बल्लेबाजी शैली को अपना नाम दिया, क्रीज पर आते ही विपक्षी गेंदबाजों पर जिस तरह का डर पैदा किया, जिस आक्रामक अंदाज में भारत-ए टीम की ओर से खेलते हुए लिस्ट ए मैचों में कोहराम मचाया - ये सभी गुण वैभव को सुपर स्टार बनाने के लिए काफी हैं। वैभव ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करते ही संदेश दे दिया था कि भविष्य का एक उभरता सितारा जन्म ले चुका है। लेकिन पिछले कुछ महीनों में उन्होंने विश्व क्रिकेट जगत में हैरतअंगेज कारनामे करते हुए विश्व क्रिकेट जगत को अपना मुरीद बना लिया है। इन दिनों दोहा में चल रहे राइजिंग स्टार्स एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के विरुद्ध मात्र 53 गेंदों पर दोहरा शतक जड़ते हुए तमाम क्रिकेट पंडितों को अपना मुरीद बना लिया है।

- **वैभव ने मात्र 52 गेंदों में 200 रन बना लिस्ट ए (उच्च स्तरीय वनडे मैच) क्रिकेट मैच में सबसे तेज दोहरा शतक जड़ा**
- **इससे पहले न्यूजीलैंड के चैड बोव्ज (103 गेंदों में 200) के नाम यह विश्व रिकॉर्ड था**
- **वैभव ने सबसे कम 28 गेंदों में शतक पूरा कर जैक फ्रेजर (29 गेंदों में शतक) का विश्व रिकॉर्ड तोड़ा**
- **इसी तरह महज 40 गेंदों में 150 रन पूरा कर विश्व रिकॉर्ड बनाया**
- **वैभव (15 साल, 242 दिन) सबसे कम आयु में लिस्ट ए मैच का दोहरा शतक बनाने वाले क्रिकेटर बने**
- **वैभव अपनी दोहरे शतकीय पारी में 28 छक्के जड़ने वाले विश्व के पहले क्रिकेटर बने, इससे पहले विश्व क्रिकेट के किसी भी प्रारूप (टेस्ट, वनडे, टी20) में किसी भी खिलाड़ी ने एक पारी में इतने छक्के नहीं जड़े थे।**

4 दिसम्बर/जन्म-दिवस

विश्व हिंदू परिषद के कार्य विस्तार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले दत्तात्रेय बालकृष्ण (नाना) भागवत का योगदान उल्लेखनीय है। इन्होंने बिहार में विश्व हिंदू परिषद की इकाईयां खड़ी कीं। संघ के कार्य को इन्होंने अपना लक्ष्य बनाया।

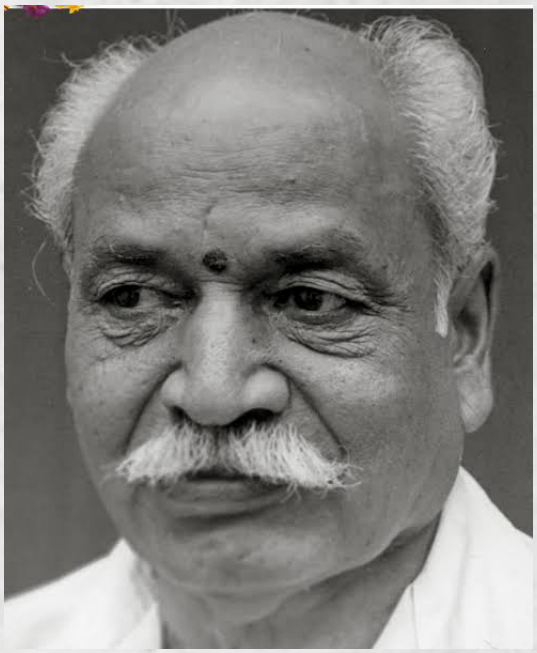

नव दधीचि नाना भागवत

बिहार में पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और फिर विश्व हिंदू परिषद के कार्य विस्तार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले दत्तात्रेय बालकृष्ण (नाना) भागवत का जन्म वर्धा (महाराष्ट्र) में 4 दिसम्बर, 1923 को हुआ था। छात्र जीवन में ही ये संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार के सम्पर्क में आ गए। तब से ही संघ कार्य को इन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

एक बार ये कुछ मित्रों के साथ डा. जी से मिलने गए। वहां जब चाय की बात चली, तो इन्होंने कहा कि मैं चाय नहीं पीता हूं। इस पर डा. हेडगेवार ने समझाया कि जिससे मिलने जाते हैं, वहां चाय के बहाने कुछ देर बैठना हो जाता है। फिर इस बीच संघ की बात चल पड़ती है। अतः संगठन करने वालों को चाय न पीने का दुराग्रह नहीं करना चाहिए। 1944 में बी.एस.सी. की शिक्षा पूर्ण कर नाना भागवत प्रचारक बने। तब तक वे संघ का तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण भी कर चुके थे। श्री गुरुजी ने उन्हें सर्वप्रथम कर्नाटक भेजा। 2 वर्ष वहां रहने के बाद 1946 में उनकी योजना बिहार के लिए हुई। इसके बाद लगभग 40 वर्ष वे बिहार में ही रहे। बिहार में छपरा जिला प्रचारक के रूप में उन्होंने काम प्रारम्भ किया। भिन्न भाषा, खानपान और परिवेश के बीच काम करना कठिन था; पर नाना भागवत भी जीवट के व्यक्ति थे। जहां भी वे रहे, वहां संघ की भरपूर फसल उन्होंने उगाई। बिहार में अनेक स्थानों पर वे जिला एवं विभाग प्रचारक रहे। 1975 में जब इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल थोपकर संघ पर प्रतिबंध लगाया, तब वे दरभंगा में विभाग प्रचारक थे। 1977 में आपातकाल तथा प्रतिबंध की समाप्ति के बाद 'विश्व हिंदू परिषद' के कार्य के महत्व को देखते हुए उन्हें बिहार का संगठन मंत्री बनाया गया। नाना भागवत ने बिहार का सघन प्रवास कर विश्व हिंदू परिषद की इकाईयां खड़ी कीं।

उनके संगठन कौशल को देखकर 1980 में उन्हें माधवराव देशमुख के साथ बिहार और उत्तर प्रदेश का सह क्षेत्रीय संगठन मंत्री बनाया गया। कुछ समय बाद उनका कार्यक्षेत्र बंगाल, उड़ीसा और समस्त पूर्वोत्तर भारत तक बढ़ा दिया गया। इस क्षेत्र में जहां एक ओर संघ का काम काफी कम था, वहां दूसरी ओर मिशनरियों की गतिविधियां जोरों पर थीं। बंगलादेश से हो रही घुसपैठ से भी यही क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित था। ऐसे में नाना ने अपने परिश्रम से सर्वत्र विश्व हिंदू परिषद का काम खड़ा किया।

किसी भी काम को बहुत व्यवस्थित ढंग से करना नाना भागवत के स्वभाव में था। 1985-86 में उन्हें वि.हि.प. के केंद्रीय मंत्री का दायित्व देकर दिल्ली केंद्रीय कार्यालय पर बुला लिया गया। उन्होंने पंजाब में आतंक के दिनों में निकाली गई 'सद्भावना यात्रा' का सुंदर समायोजन किया।

इससे पूर्व 'प्रथम एकात्मता यात्रा' में नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर से चली यात्रा के संयोजक भी वही थे। इस यात्रा से ही विश्व हिंदू परिषद का देशव्यापी संजाल बना और श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन की भूमिका बनी। आगे चलकर जब अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण का आंदोलन चला, तो 'शिलापूजन कार्यक्रम' की पूरी व्यवस्था उन्होंने ही सम्भाली।

नाना भागवत संघ के जीवनव्रती प्रचारक थे। उनके पास निजी सम्पत्ति तो कुछ थी नहीं पर 16 जून, 2002 को उन्होंने अपने शरीर को भी चिकित्सा विज्ञान के छात्रों को देने की घोषणा की। देहदान के ऐसे उदाहरण देखने में कम ही मिलते हैं। 19 दिसम्बर, 2006 को दिल्ली में ही उनका देहांत हुआ। उनकी इच्छानुसार उनका पार्थिव शरीर चिकित्सा महाविद्यालय को दे दिया गया।

केवल जीवन में ही नहीं, तो जीवन के बाद भी समाज के लिए सर्वस्व अर्पण करने वाले ऐसे नवदधीचि स्तुत्य हैं। ●●●



ओजपूर्ण व्यक्तित्व के धनी रंगा हरि

रंगा हरि बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी बातचीत की शैली इतनी रोचक थी कि लोग सहज ही इनसे प्रभावित हो जाते थे। वे हंसते-हंसते भी कई गम्भीर संदेश दे देते थे।

संघ के वरिष्ठ प्रचारक रंगा हरि का जन्म 5 दिसम्बर, 1930 को केरल में कोच्चि के पास त्रिपुन्थरा गांव में हुआ था। 13 वर्ष की अवस्था में वे शाखा जाने लगे थे। 1948 में संघ पर लगे प्रतिबंध के विरोध में सत्याग्रह कर वे 5 महीने कन्नूर जेल में बंद रहे। स्नातक करने के बाद वे प्रचारक बने।

अपनी प्रचारक यात्रा में विभिन्न दायित्व निभाते हुए हरि जी 1983 में केरल के प्रांत प्रचारक, 1990 में अ.भा. सहबौद्धिक प्रमुख तथा 1991 से 2005 तक अ.भा.बौद्धिक प्रमुख रहे। एशिया और आस्ट्रेलिया में संघ कार्य के प्रभारी के नाते वे वहां प्रवास पर भी गए। 75 वर्ष के होने पर उन्होंने प्रत्यक्ष दायित्व से मुक्ति ले ली। फिर भी अगले 15 वर्ष तक वे प्रवास करते रहे। उनके भाषण और वार्तालाप की शैली इतनी रोचक थी कि बच्चे और बड़े सब उन्हें घेरे रहते थे। हंसते-हंसते गम्भीर संदेश देने की उनकी शैली अद्भुत थी।

केरल में ईसाई, मुस्लिम और कम्यूनिस्ट तीनों संघ को समूल नष्ट करने में लगे रहते हैं। एक समय वहां हिन्दुओं का मनोबल बहुत गिरा हुआ था। केरल के प्रांत प्रचारक भास्कररावने प्रयासपूर्वक इस माहौल को बदला और हिंदुओं को ईंट का जवाब पत्थर से देने वाला बनाया। भास्कररावके बाद हरि जी ने इसी नीति को आगे बढ़ाया। इस संघर्ष में सैकड़ों स्वयंसेवक मारे गए। अनेक कार्यकर्ताओं को आजीवन कारावास हुआ, लेकिन दिल पर पत्थर रखकर संघ ने इसे सहन किया। इनकी चर्चा से ही हरि जी की आंखें भीग जाती थीं। केरल के खानपान में मछली सामान्य चीज है, पर वे वैष्णव परिवार से थे। अतः कई बार उन्हें दही-भात ही खाना पड़ता था। हरि जी को केरल में उनके संगठन कौशल के लिए जाना जाता है, पर देश भर में उनकी पहचान एक प्रबुद्ध वक्ता, लेखक तथा बौद्धिक योद्धा की थी। उनकी कई भाषाओं में लिखित और अनुवादित 62 पुस्तकें हैं। श्रीगुरुजी की जन्मशती पर नागपुर में रहकर उन्होंने श्रीगुरुजी समग्र को 12 खंडों में प्रकाशित करवाया।

वे नए लेखकों को बहुत प्रोत्साहित करते थे। एक बार का पढ़ा हुआ उन्हें संदर्भ सहित याद रहता था। मलयालम उनकी मातृभाषा थी, पर भाषा सीखने की रुचि के कारण वे हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, तमिल, कोंकणी, मराठी, गुजराती, बंगला और असमी भी समझ और बोल लेते थे। देहांत से कुछ दिन पूर्व ही उनकी पुस्तक 'पृथ्वी सूक्त' प्रकाशित हुई थी। केरल में केवल संघ ही नहीं, तो अन्य विचारों के लोग भी उनका आदर करते थे। संघ से इतर अन्य सामाजिक कामों को उनका समर्थन तथा सहयोग रहता था। इन दिनों प्रवास से विश्राम लेकर वे कोच्चि के संघ कार्यालय पर रह रहे थे। 29 अक्तूबर, 2023 को कोच्चि में ही उनका देहांत हुआ।

केरल में विभिन्न जातियों के अलग शमशान होते हैं, पर उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार उनका दाह संस्कार सार्वजनिक शमशान (आइवरम मठम) में हुआ। कहते हैं कि पांडवों ने अपने पूर्वजों का पिंडदान वहां किया था। उनकी अस्थियां भी किसी तीर्थ की बजाय पास के जलाशय में ही विसर्जित की गईं। वे ब्रह्मकपाल में अपना श्राद्ध एवं पिंडदान कर चुके थे, जिससे किसी पर कोई बंधन न रहे। केरल में वामपंथी नेताओं का लाल कपड़े में अग्निदाह किया जाता है। इसकी देखादेखी कई स्वयंसेवकों का दाह संस्कार भगवा कपड़े में होने लगा। हरि जी ने भगवे रंग को पवित्र बताते हुए इसके लिए मना किया था।

उन्होंने तीन संस्कृत श्लोकों में अपने जीवन को धन्य मानते हुए भगवान से प्रार्थना की थी कि अगले जीवन में भी उन्हें अपने साथियों के साथ यही संघ कार्य करने का अवसर दे।

•••

नासा की नई खोजः सोलर सिस्टम के 27 बर्फीले अवशेष



नासा के हबल और जेम्स वेब टेलीस्कोप ने नेपच्यून के पार 27 नई बर्फीली वस्तुएं खोज निकाली हैं। ये ट्रांस-नेप्च्यूनियन ऑब्जेक्ट्स हमारे सोलर सिस्टम के सबसे पुराने अवशेष हैं। अरबों साल पहले जब ग्रह बन रहे थे, तब बचे हुए ये छोटे-छोटे पिंड आज भी अपनी मूल सतह को संजोए हुए हैं। वैज्ञानिकों को हैरानी हुई कि छोटे ढ़छजी के रंग बड़े पिंडों जैसे ही हैं। इससे पता चलता है कि उनकी सतह ज्यादा नहीं बदली और वे अपने जन्म की कहानी अब भी याद रखे हुए हैं। वेब टेलीस्कोप ने 5 किलोमीटर जितनी छोटी वस्तु तक देख ली, जो चांद पर जुगनुओं के झुंड को पृथ्वी से देखने जितना कठिन काम था। ये खोज ग्रह निर्माण के शुरुआती हालात को समझने का नया दरवाजा खोलती है।

6.7 करोड़ साल पुराना टी-रेक्स कंकाल 5 करोड़ डॉलर में नीलाम



अमेरिका में लगभग 6.7 करोड़ साल पुराने एक टी-रेक्स कंकाल की नीलामी रिकॉर्ड 5.01 करोड़ डॉलर (करीब 430 करोड़ रुपए) में हुई। इस कंकाल का नाम 'गस' रखा गया है और यह दुनिया का अब तक का सबसे महंगा जीवाश्म बन गया है। यह दुर्लभ अवशेष साउथ डकोटा के हेल क्रीक फॉर्मेशन से मिला था, जहां पहले भी कई महत्वपूर्ण डायनासोर जीवाश्म मिल चुके हैं। टी-रेक्स को डायनासोरों का सबसे ताकतवर शिकारी माना जाता है। इसकी लम्बाई करीब 38 फीट और ऊंचाई 12.5 फीट तक होती थी। इसके जबड़े इतने मजबूत थे कि शिकार की हड्डियां तक तोड़ सकते थे। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि इस कंकाल से ग्रह पर जीवन के विकास और विलुप्ति के कई रहस्य सुलझ सकते हैं। इतनी ऊंची कीमत इस बात का सबूत है कि प्राचीन जीवन के अवशेष आज भी कितने कीमती हैं।

समुद्र के 6 मील नीचे मिला एलियन जैसा रहस्यमय जीव

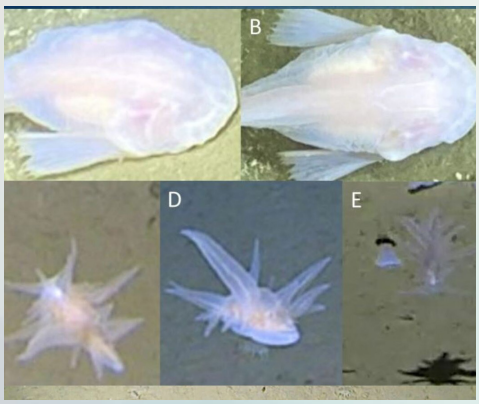

जापान के रयुक्यु ट्रेंच में वैज्ञानिकों को समुद्र की सतह से करीब 6 मील (9 किलोमीटर) नीचे एक अजीब जीव मिला है। यह सफेद और पारदर्शी जीव किसी हॉरर फिल्म के एलियन जैसा दिखता है। इसका शरीर दो बराबर हिस्सों में बंटा है और सिर पर एंटीना जैसी आकृतियां हैं। इतनी गहराई पर पानी का दबाव सतह से 1000 गुना ज्यादा होता है, जहां लोहा भी पिचक सकता है। वैज्ञानिक इसे किसी भी ज्ञात जैविक समूह में रखने में नाकाम रहे हैं। फिलहाल इसे 'एनीमेलिया इनसर्टा सेडिस' नाम दिया गया है, यानी जिसकी पहचान अभी तय नहीं। लिमिटिंग फैक्टर नाम की सबमर्सिबल से पहली बार इसे साफ कैमरे में कैद किया गया। यह खोज बताती है कि धरती के सबसे गहरे समुद्र अभी भी अनगिनत रहस्यों से भरे हैं।

संघ के कार्यकर्ता विकास वर्ग-2(विशेष) का शुभारम्भ





नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता विकास वर्ग-2 (विशेष) का उद्घाटन विगत रविवार सुबह नागपुर के स्मृति भवन परिसर स्थित संत शिरोमणि रविदास सभाकक्ष में हुआ। वर्ग के पालक अधिकारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख रामलाल जी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक किसी एक व्यक्ति के जयकारे या संघ के जयकारे के लिए काम नहीं करते, बल्कि केवल 'भारत माता की जय' के लिए जीवनभर काम करते हैं। क्योंकि देश और समाज के बारे में सोचने वाले नागरिकों का निर्माण करना ही संघ का कार्य है।

मंच पर सह सरकार्यवाह मुकुंद जी तथा वर्ग के सर्वाधिकारी छत्तीसगढ़ प्रांत संघचालक डॉ. टोपलाल वर्मा जी उपस्थित थे। भारत माता की प्रतिमा पर पुष्पार्चन किए जाने के बाद संगठन मंत्र के साथ वर्ग का औपचारिक शुभारम्भ हुआ। यह प्रशिक्षण वर्ग 16 दिसम्बर तक चलेगा। इसमें देशभर से 500 शिक्षार्थी सहभागी हुए हैं।

रामलाल जी ने कहा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक पूजनीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने दूरदर्शिता के साथ संघ की स्थापना की। अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध देशभर में चल रहे संघर्ष के कारण देश को निश्चित रूप से स्वाधीनता मिलेगी, परंतु पुनः ऐसी परिस्थिति न आने पाए, इसलिए संघ की स्थापना हुई। राष्ट्र को बेहतर बनाने के लिए नागरिकों का राष्ट्रभक्त होना आवश्यक है। अपनी संस्कृति पर गर्व होना चाहिए, सम्पूर्ण समाज में एकता होनी चाहिए और 'भारत माता की जय' ऐसा एक सूत्र होना चाहिए, जिसमें किसी प्रकार का भेदभाव न हो। इस बात को डॉ. हेडगेवार ने समझा था। इसलिए संघ की रचना भी इसी दृष्टि से की। संघ की 100 वर्षों की यात्रा में अनेक संकट आते रहे हैं। तीन बार प्रतिबंध लगाए जाने के बावजूद स्वयंसेवक विचलित नहीं हुए। स्वयंसेवकों की कर्मठता, निष्ठा और जीवटता के कारण ही संघ आज इतना बड़ा हुआ है। संघ की कार्यपद्धति धीरे-धीरे विकसित होती गई। इस कार्यपद्धति में समय के अनुसार बदलाव होते रहते हैं। जबकि संघ का मूल विचार आज भी कायम है।

प्रशिक्षण के लिए संकल्प आवश्यक

शिक्षार्थियों को प्रशिक्षण वर्ग का महत्व समझाते हुए उन्होंने कहा, यहां आए सभी कार्यकर्ताओं को संघ की पूरी जानकारी है। ऐसे में अब नया क्या सीखना है, यह सवाल उठ सकता है। लेकिन संघ की वैचारिक गहराई को समझने और उसमें विशेषज्ञता हासिल करने के लिए इस वर्ग का आयोजन किया जाता है। संघ से जुड़े प्रत्येक विषय का गहन अध्ययन हो, यही इस प्रशिक्षण का उद्देश्य है। यह एक प्रकार की साधना है। प्रशिक्षण उचित तरीके से हो, इसके लिए संकल्प आवश्यक है। अगले 25 दिन तक स्मृति मंदिर के इस पवित्र परिसर में प्रशिक्षण प्राप्त कर हम भारत माता की सेवा के लिए और भी सक्षम बनेंगे। विदित हो कि कार्यकर्ता विकास वर्ग द्वितीय विशेष का समापन आगामी 16 दिसम्बर को दीक्षांत के पश्चात होगा।

दिव्यांग कल्याणकारी संस्था में दीपोत्सव का आयोजन



पुणे के वानवडी स्थित दिव्यांग कल्याणकारी संस्था में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी त्रिपुरारी पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती एवं तुलसी विवाह का आयोजन बड़े उत्साह के साथ किया गया। इस अवसर पर श्री गुरु नानक एवं गुरु ग्रंथ साहिब को पुष्पांजलि अर्पित की गई। इसके साथ ही संस्था का सम्पूर्ण परिसर 5,000 दीपों से जगमगा उठा। दिव्यांग कल्याणकारी संस्था के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं सेवकों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की। सर्वप्रथम तुलसी विवाह का आयोजन किया गया। इस विवाह समारोह में सभी दिव्यांग बाल-गोपालों के साथ ही परिसर के नागरिकों ने भी उपस्थित रहकर उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस विवाह समारोह में लगभग 250 लोगों की उपस्थिति रही। शाम 6 बजे विवाह सम्पन्न होने के बाद परिसर में दीपों की विभिन्न प्रकार की आकर्षक रचनाएं बनाकर दीपोत्सव मनाया गया। उक्त कार्यक्रम अत्यंत उत्साह और आनंद के वातावरण में सम्पन्न हुआ। सभी दिव्यांग बच्चों ने इसमें बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। विदित हो कि दिव्यांग बच्चों को अपनी संस्कृति से परिचित कराने के उद्देश्य से संस्था द्वारा इस प्रकार के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

उक्त कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संस्था के कार्याध्यक्ष एडवोकेट मुरलीधर कचरे, सचिव शंकरराव जाधव, सहसचिव राहुल बनकर, सह-कोषाध्यक्ष मारुति राऊत, मुख्याध्यापिका शिवानी सुतार, चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर विजया हरणे तथा अन्य सभी शिक्षकों एवं सेवकों ने अथक परिश्रम किया।

लघु उद्योग भारती, जालना इकाई द्वारा विगत सोमवार, 23 नवम्बर 2026 को कवि सम्मेलन एवं दीपावली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर लोकप्रिय मराठी कवयित्री गुंजन पाटिल तथा कविगण नारायण पुरी, अविनाश भारती एवं नीलेश चव्हाण ने अपनी विनोदी कविताओं, हास्य-व्यंग्य एवं दमदार प्रस्तुति से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।




पितांबरी
देवभक्ती
अगरबत्ती
With Natural Ingredients
मनाएँ दीपावली
का त्योहार,
प्राकृतिक सुगंध
के साथ!
दीपावली की मंगलमय
शुभकामनाएँ !
पितांबरी
देवभक्ती
अगरबत्ती
अनुभव करें भक्ति की शक्ति!
चंदन
गुलाब
मोगरा
NATURAL
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564/5699
Toll Free: 18001031299
Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314